

# ‘पत्र’ सम्पादक के नाम

ज्ञानामृत के अप्रैल, 2008 के अंक में ‘समस्या और समाधान’ लेख पढ़कर यह सोचने को मज़बूर होना पड़ा कि आज मानव को मानवता की राह पर ले जाने में राजनैतिक पार्टियाँ असफल हैं, विज्ञान असफल है तथा संप्रदाय भी असफल हैं। मनुष्य को मनुष्य कैसे बनाया जाये, इस युग की भयंकरतम मूल समस्या यही है जिसे लेखक ने सरलतम भाषा -शैली में पाठकों हेतु रखा है, इसके लिए वो ‘साधुवाद’ के पात्र हैं। साथ ही पाठकों से भी निवेदन है कि लेखक के विचारों को कार्यरूप में परिणत करने हेतु कार्य योजना तैयार करें तथा अच्छे मानव बनने का प्रयास करें तभी ‘ज्ञानामृत’ का पीना सार्थक होगा।

– **रमेश चन्द्र वर्मा, फ़िरोजाबाद**  
ज्ञानामृत के अप्रैल, 2008 के अंक में छपा लेख ‘प्रतिक्रिया से पहले सोचो’ बहुत ही अच्छा लगा। बिना सोचे समझे प्रतिक्रिया करने वाला मनुष्य ठीक उसी प्रकार दुःखी होता है जैसे नेवले को मारने वाला ब्राह्मण। आज अपराध बढ़ने का कारण भी यही है कि मनुष्य प्रतिक्रिया से पहले विचार नहीं करता। ‘लौट चलें मूल्यों की ओर’ नामक लेख बहुत ही अच्छा लगा। मनुष्य को अपने मूल्यों की ओर वापस लौटना ही होगा। ज्ञानामृत पत्रिका ज्ञान का अमृत है, एक



सराहनीय कदम है।

– **साधना शर्मा, गिरी नगर, सिरमौर**  
मई, 2008 की ज्ञानामृत पत्रिका में ‘आज के संदर्भ में सत्याग्रह और भूख हड़ताल’ की विशेष व्याख्या पढ़कर बेहद की शान्ति इस हृद की दुनिया में मिली, मालामाल हो गया मन, पवित्र हो गई बुद्धि।

– **धर्मनाथ प्रसाद, पटना**  
ज्ञानामृत के मई, 2008 के अंक में ‘विदेही अवस्था’ सबसे अच्छा लेख लगा। विदेही बनने के लिए हमेशा यह सोचो कि मैं फरिश्ता हूँ। चलते-फिरते, उठते-बैठते इसी भाव में रहो। अपने को बार-बार स्मृति दिलाओ कि मैं लाइट हूँ, मैं माइट हूँ, यही हमारा पहला पाठ है। इससे ही हमारी विदेही अवस्था हो जायेगी।

– **नीलकंठ, चिरकुन्डा (धनबाद)**  
जून, 2008 के अंक में ‘मम्मा, संपूर्ण मम्मा दिखाई देती थी’ यह लेख पढ़कर मुझे जो अनुभव हुआ, वह मैं शब्दों में लिख नहीं सकती। लेख को

पढ़कर मुझ आत्मा में असीम शक्ति का संचार हुआ। अपने सम्मुख मम्मा की आकृति का आभास हुआ। विचार चला, लेख पढ़कर इतना अच्छा लगा तो साकार मिलन कितना न अच्छा लगता। पिछले दो दिनों से मेरा मन अशान्त था। मम्मा ने मुझे सांत्वना और धीरज दिया। मम्मा, बाबा को मेरा शतकोटि प्रणाम!

– **ब्र.कु. सरस्वती क्यासा, विदर**  
जून माह का ज्ञानामृत अंक पढ़कर महसूस किया कि मुझे जीवन में अमृत तो मुनासिब नहीं हुआ लेकिन ज्ञानामृत का मिलना भी उससे कम नहीं है। इसे पढ़कर मैं यह तो नहीं कहूँगा कि विचारों में परिवर्तन हो गया है लेकिन आत्ममंथन जरूर प्रारंभ हो गया है। मेरे जीवन, कार्य-शैली, सोच में कितना बदलाव आता है, यह तो वक्त पर निर्भर करेगा लेकिन इसे पढ़कर मैं स्वयं को सौभाग्यशाली अवश्य मान रहा हूँ। ‘उपयोग और उपभोग’ की तुलना ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश जी ने अनूठे ढंग से की है। ‘एक नज़र : पारिवारिक मूल्यों पर’ मंचन योग्य श्रेष्ठ प्रसंग है जो समाज में एक असर पैदा कर सकता है। ‘कारागार बना मुक्ति का द्वार’ एक अभूतपूर्व व सराहनीय प्रयास है। आपसे अनुरोध है कि अन्य सदस्यों में आये परिवर्तन के रोचक प्रसंग अधिक से अधिक शामिल करें जिससे हमें भी मार्ग-दर्शन मिल सके। ज्ञानामृत का रस सर्वव्यापी हो, इसी आशा के साथ।

– **संदीप जैन, विलासपुर (छ.ग.)**

